

Shatpadi Bhashantar

Folder No.	022231
Granth Name	Shatpadi Bhashantar
Author	Mahendrasinhisuri
Publisher	Ravji Devraj Shrivak
Edition	1
Year	1895
Pages	248

शतपदि भाषांतर

झोडर नं	०२२२३१
ग्रन्थ	शतपदि भाषांतर
लेखक	महेन्द्रसिंहसूरि
प्रकाशक	रवजि देवराज श्रावक
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१८८५
पृष्ठ	२४८

मुख्य टाईटल

प्रस्तावना -----	६
शतपदीनुं सारांश -----	७
अनुक्रमणिका	
मंगलाचरण तथा उपोद्घात -----	१
प्रतिमा सपरिकर तथा अपरिकर बन्ने वांटी शकाय -----	२
साधुने वंशनोळ हांडो कल्पे अेवो नियम नथी बीज लाकडानुं पण कल्पे -----	११
श्रावके स्थापनाचार्य नलि थापवो -----	२६
साधु कारणवशे सूत्रार्थ पोरसीमां उलटपालट पण करी शके -----	३८
साधु कारणे यलोटानुं प्रांत पण गोपवी शके छे -----	५०
साधुना उपाश्रयमां गीत नृत्य नलि कल्पे -----	६१
पासन्थादिकने उत्सर्गे वांटवा नलि पण कारणे वांटवा पण कल्पे -----	७१
उत्सर्गे त्रिसंध्याअेज पूज करवी पण अपवादि आगल पाछल पण थर्छ शके -----	८१
तुंभानुं पात्र अलेपित न वापरवुं बीज पात्रा विषे नियम नथी -----	८१
अधिकमास थतां संवछरी पडिकमाणुं श्रावण सुदि पांचमे ज करवुं -----	१०१
साधु श्रावकना घरो उपरांत बीज कुलोथी पण त्मिक्षा लछ शके छे -----	१११
श्रावकोने उपधान नलि वळेराववा तथा माणारोपण नलि कराववुं -----	१२१
नोंकारमंत्रनी यूनिकांमां छोछंमंगळ कळेवुं -----	१३१
परयूरण विचारो -----	१३१